Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

सांस्कृतिक परंपरा की बदलती परिभाषा

MRS. MAMTA DEVI MEENA
Research Scholar;
Maharaja Surajmal Brij University,
Bhartpur (Rajasthan)
Email : pinkyparya88@gmail.com

भारतीय सभ्यता संस्कृति

भारतीय सभ्यता आज से करीबन 5000 वर्ष पूर्व अस्तित्व में आई सिंधु घाटी सभ्यता के साथ। सिंधु घाटी सभ्यता की कुछ बातें आज भी भारतीय संस्कृति की अभिन्न अंग बनी हुई हैं जैसे- लिंग पूजा, वृक्ष पूजा, पशु पूजा ,नदियों की पूजा आदि।वैदिक काल में लिखित वेद ,पुराण ,महाकाव्य आज भी भारतीय जनमानस संस्कृति के उच्च आदर्श बने हुए हैं जैसे -योग करना, हाथ जोड़कर नमस्ते करना, खाना खाने से पूर्व हाथ धो लेना, शुद्ध शाकाहारी भोजन करना आदि। यह सभी कार्य हमें आधुनिक युग में कोरोना जैसी महामारियों से बचाने के लिए उपयोगी हैं। इनका महत्व विश्व के लगभग सभी देशों ने माना है । 21 जून को "विश्व योग दिवस" मनाया जाता है जो भारतीय संस्कृति के लिए गर्व की बात है क्योंकि जो विश्व को भारतीय संस्कृति की ही देन है। इसी प्रकार महात्मा बुध ,महावीर जैन आदि के धार्मिक उपदेशों में विश्व कल्याण की भावना निहित है। सम्राट अशोक की धम्मघोस की नीति , विश्व को युद्ध के स्थान पर, शांति और भाईचारे के लिए प्रेरित करती है। बादशाहा अकबर की धार्मिक सहिष्णुता नीति भी स्मरणीय है।आधुनिक युग में राजा राममोहन राय ,स्वामी विवेकानंद , दयानंद सरस्वती, भीमराव अंबेडकर, गाँधी जी के विचार भारतीय सभ्यता संस्कृति को और समृद्ध बनाते हैं।

वागड़ आदिवासियों की सांस्कृतिक परंपराओं का बदलता स्वरूप :-

वागड़ दक्षिणी राजस्थान के डूँगरपुर ,बाँसवाड़ा जिलों को सम्मिलित रूप में कहा जाता है। यहाँ पर अरावली पर्वतमाला की श्रंखलाओं का जाल सा बिछा हुआ है ।डूँगरपुर में तो डूँगरों की अधिकता के कारण उसका नाम ही डूँगरपुर पड़ गया । यह क्षेत्र उबड़ खाबड़, पथरीली मिट्टी वाला है। यहाँ पर वर्षा ऋतु में मौसम अच्छा रहता है । अच्छी वर्षा होने पर खरीफ की फसल विशेष रूप से मक्का का अच्छा उत्पादन हो जाता है। परंतु वर्षा ऋतु के बाद 8 माह तक पानी की किल्लत रहती है और रोजगार की भी समस्या रहती है। यहाँ की पथरीली जमीन उपजाऊ नहीं है। जिसके कारण यह क्षेत्र आर्थिक रूप से

काफी पिछड़ा हुआ है, परंतु सांस्कृतिक रूप से यह बहुत समृद्ध है। यहाँ के मूलनिवासी भील ,गरसिया , डामोर , मीणा आदि आदिवासी वनों के आस-पास, पहाड़ों के ऊपर,पहाड़ियों की तलहटियों में निवास करते आए हैं । सदियों से इनकी अपनी अलग-अलग मान्यतायें, परंपराएं, विश्वास चले आ रहे हैं । जिनका ये सदियों से यथावत पालन करते आ रहे थे। परंतु वर्तमान युग में हमें इनकी संस्कृति में काफी बदलाव नजर आते हैं। आइए नजर डालते हैं इनकी बदलती परिस्थितियों और बदलते संस्कारों पर -

जन्म संस्कार

वागड़ देश का ऐसा क्षेत्र है जहाँ पर लड़का या लड़की दोनों का जन्म उत्सव बहुत अच्छे से मनाया जाता है। यहाँ पर लिंग के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव देखने को नहीं मिलता है। डूँगरपुर का लिंगानुपात राजस्थान का सबसे अधिक लिंगानुपात है जो 944/1000 है। बच्चों के जन्म उत्सव पर महिलाएं एकत्रित होती है। मंगलगान गाती हैं । पहले उन्हें मक्के की घुघरी(उबले हुए मक्के) और गुड वितरित किया जाता था। परंतु आजकल लोग मिठाइयां वितरित करते हैं। बच्चे का नाम रखने का अधिकार बुआ जी को होता है।

शिक्षा

डूँगरपुर और बाँसवाड़ा ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ पर शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार नहीं हुआ है। इसका एक कारण यहाँ की भाषा वागड़ी है और जो शिक्षक आते हैं वो ज्यादातर हिंदी भाषी होते हैं। भाषा की वजह से शिक्षक और छात्रों के मध्य उतना तालमेल नहीं बैठ पाता है जितना कि बैठना चाहिए। दूसरा कारण कुछ माता-पिता भी अपने बच्चों को बाल मजदूरी कराने के लालच में स्कूल नहीं भेजते हैं। हालांकि वर्तमान युग में यहाँ के आदिवासी लोगों में भी शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है ।वो भी अपने बच्चों को अब अच्छे स्कूलों में पढ़ने भेजने लगे हैं। इस क्षेत्र में अभी भी समस्याएं बहुत हैं ।

रोजगार

वागड़ की जलवायु और भूमि ऐसी है कि यह क्षेत्र आर्थिक रूप से निर्धन बना हुआ है। जब कभी वागड़ वन संपदा से संपन्न हुआ करता था तो ,यहाँ के आदिवासी आत्मनिर्भर, संपन्न स्वतंत्र जीवन यापन किया करते थे, क्योंकि उनकी सारी जरूरतें वनों से ही संपन्न हो

जाया करती थी ।अंग्रेजों के आने के बाद महारावल और अंग्रेजों की वन नीतियों ने आदिवासियों को आर्थिक रुप से दर -दर की ठोकर खाने पर मजबूर कर दिया। वर्तमान युग में दक्षिण राजस्थान के पुरुष वर्ग एक बड़ा तबका गुजरात के अहमदाबाद जैसे शहरों तथा सऊदी अरब देशों जैसे - ईरान ,इराक , कुवैत में जैसे देशों में रोजगार की तलाश में पलायन कर जाता है। हजारों लाखों मजदूरों के पलायन की दास्तां अभी हम सभी ने कोरोना काल में देखी थी । कैसे काम बंद होने पर वे अपने मूल निवास स्थान लौटने को बेबस , मजबूर और लाचार थे ? जो पुरुष विदेशों में कमाने चले जाते हैं । उनके पीछे छूट जाता है उनका परिवार, परिवार में अक्सर महिलाएं और बच्चे ही रहते हैं । ऐसे में महिलाओं को घर और बाहर की दोहरी जिम्मेदारी निभाती पड़ती है ।

महिलाओं की स्थिति

वागड आदिवासी भील महिलाएं बहुत ही सरल स्वभाव वाली, परंतु कर्मठ और बहादुर होती हैं। कई महिलाओं के पिता ,भाई , पति , तो विदेश में कमाने - खाने चले जाते हैं, और कई महिलाओं के पति शराब पीकर के घर में ही पड़े रहते हैं। केवल तीज त्योहार पर ढोल बजाने का कार्य करते हैं ।ऐसे में महिलाओं महिलाओं की जिम्मेदारी ज्यादा बढ जाती है। ऐसी महिलाओं का जीवन बचपन में प्राय बाल मजदूरी से शुरू होता है और जीवन पर्यंत मजदूरी करने करते ही खत्म हो जाती हैं ।ऐसी मजबूर महिलाओं का समाज के ठेकेदारों द्वारा शारीरिक और मानसिक शोषण भी खूब होता है ।यूँ कहने को तो वागड़ की महिलाएं ज्यादा स्वतंत्र मानी जाती हैं, क्योंकि उन्हें काम करने की आजादी होती है और उन्हें वर चुनने की आजादी होती है, परंतु यह आजादी उनके लिए बहुत महंगी साबित होती है क्योंकि शादी के बाद अक्सर घर परिवार की जिम्मेदारी उन्हें अकेली ही निभानी होती है । कई बार एक ही पुरुष कई महिलाओं के प्रेम में संलग्न होता है ऐसे में महिला अपने आप को ठगी से महसूस करती हैं ।

कुछ महिलाएं स्वयं भी विवाहेत्तर संबंधों में लिप्त रहती हैं । ऐसे संबंधों से परिवार की नींव कमजोर पड़ती है। इसका प्रभाव उनके बच्चों पर बहुत बुरा पड़ता है। बच्चे भी जब थोड़े बड़े होते हैं वो भी इसी तरह के कार्यों में लिप्त होने लगते हैं। उनकी यह संस्कृति उनके लिए बहुत भारी साबित होती है। उनका जीवन उसी चक्र में चलता रहता है जहाँ से शुरू वहीं पर खत्म हो जाता है । जीवन में कोई और मूल्य नहीं जुड़ पाते हैं और ना ही कोई विकास

हो पाता है।यद्यपि वर्तमान में कुछ पढ़े-लिखे परिवारों में सुधार देखने को मिलता है परंतु वह सुधार बहुत कम है।

विवाह

विवाह से संबंधित संपूर्ण भारत में अनेक रस्म- रिवाज, परंपराएं व्याप्त हैं। सामान्यतः यह देखा जाता है कि विवाह के समय लड़की वाले अपनी लड़की के लिए योग्य वर ढूँढ कर विवाह करते हैं , परंतु वागड़ में इस हेतु अनेक प्रकार की परंपराएं देखने को मिलेंगी।

(1) यहाँ पर प्रेम विवाह ज्यादा होते हैं । लड़के लड़कियाँ आपस में एक दूसरे को मेले और हॉट आदि, सांस्कृतिक उत्सवों में पसंद कर लेते हैं। घर वालों को पता चल जाता है तो वे उनकी शादी करा देते हैं।

(2) यहाँ पर एक खास परंपरा देखने को मिलती है यहाँ कन्या पक्ष वाले परिवार को कुछ वस्तुएं और मुद्रा मिलती हैं जिसे दापा कहते हैं ।शायद इसी वजह से यहाँ पर लिंगानुपात ज्यादा मिलता है क्योंकि यहाँ पर लड़कियों को बोझ नहीं समझा जाता है । लड़कियों की शादी में उन्हें दहेज देना नहीं होता है बल्कि उन्हें दहेज के रूप में दापा मिलता है।

(3) यदि वर की आर्थिक स्थिति दापा मूल्य को चुका पाने की नहीं होती है तो बसक आयोजित करके दापा राशि परिवार ,रिश्तेदार, गाँव के सहयोग से एकत्रित की जाती है। यह परंपरा आपसी सहयोग पर आधारित यह है ।

(4) नातेरा प्रथा में भी आपसी सहयोग देखने को मिलता है। इसमें जिन संबंधियों को शादी का कार्ड दिया जाता है वो सगे संबंधी नव दंपति के गृहस्थ जीवन में काम आने वाली वस्तुएं उपहार स्वरूप में देते हैं। इससे नव दंपत्ति पर अचानक से आर्थिक बोझ नहीं पडता है । इसी परंपरा के तहत वो किसी दूसरे के घर में शादी होने पर उन्हें उपहार देकर निभाते हैं।

(5) शादी के समय अक्सर दुल्हन द्वारा लाल जोड़ा पहना जाता है । परंतु वागड़ी आदिवासी दुल्हने पीले वस्त्र पहनती हैं।

(6)विवाह के अवसर पर किसी प्रकार की पंडित की आवश्यकता नहीं होती है ।सगे संबंधी ही आपस में मिलकर विवाह की रस्मों को पूरा करते हैं।

विवाह के प्रकार

वागड़ में मोरबंदिया विवाह, चुपचाप भाग जाना, घर जंवाई , कलाई पकड़ना, हाई राखवी, बहुपत्नी, परीक्षा विवाह, सेवा विवाह , देवर बट्टा विवाह आदि प्रकार के विवाह प्रचलित हैं। आदिवासियों के विवाह की रस्म -रिवाज सामान्यतः होने वाले से काफी अलग होती हैं । परंतु बदलती परिस्थिति के अनुसार अब यह भी वैसी चीजों को अपनाने लगे हैं जो कि सामान्यतः लोग अपने शादी समारोहों में अपनाते हैं।

मेले और हॉट

वागड़ एक ऐसा स्थान है जहाँ पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों तीज त्योहारों की धूम रहती है । वागड़ को सांस्कृतिक स्थली कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । वागड़ का प्रसिद्ध मेला है बेणेश्वर धाम का मेला है ।यह मेला, सोम ,माही, कमला नदी की त्रिवेणी पर , जनवरी-फरवरी में प्रतिवर्ष आयोजित होता है । यह मेला सांप्रदायिक सौहार्दता के लिए प्रसिद्ध है भीलों आदिवासियों के अलावा अन्य समुदाय के लोग भी इसमें होते हैं । राजस्थान के अलावा गुजरात मध्य प्रदेश और अन्य राज्यों से भी लोग यहाँ पर बड़ी संख्या में एकत्रित होते हैं। बेणेश्वर धाम में बेणेश्वर महादेव के मंदिर का निर्माण डूँगरपुर के महारावल आसकरण द्वारा करवाया था । महारावल शिवसिंह ने राज्य की उन्नति हेतु यहाँ पर मेला आयोजित करना प्रारंभ किया था तभी से यहाँ पर प्रति वर्ष मेले का आयोजन होता है। दूसरा मेला आयोजन होने का एक प्रमुख कारण है। कृष्णा अवतार मावजी के भक्त मालव जी की कर्मस्थली बेणेश्वर पर भजन मंडलियों सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करते हैं। इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मावजी की आगमवाणी यों का यशोगान गाया जाता है, खेलकूद प्रतियोगिताएं आयोजित होती हैं । विविध प्रकार की दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुएं भी यहाँ पर मिलती हैं। संपूर्ण वागड़ सांस्कृतिक परंपराओं की विविध झाँकियाँ हमें देखने को मिलती हैं ।

बेणेश्वर धाम की तरह ही घोटिया अंबा केला पानी इस मेले का धार्मिक महत्व के साथ पौराणिक महत्व भी जुड़ा हुआ है । घोटिया अंबा वह जगह है जहाँ पर पांडवों ने अज्ञातवास में विश्राम किया था और देवताओं को केले के पत्तों पर भोजन करवाया था। यहां पर स्थित आम्र वृक्ष ,(मनोकामना वृक्ष)भी बहुत प्रसिद्ध है लोग यहाँ मन्नत मांगने और मन्नत पूरी होने विशेष रूप से आते हैं। वे लोग यहाँ आकर के पांडव कुंड में स्नान करते हैं।

दान पुण्य करते हैं आम वृक्ष के नीचे यज्ञ आदि करते हैं । लोग पवित्र कुंड से जल पात्रों में जल भरकर अपने घर भी ले जाते हैं। उनकी ऐसी मान्यता है कि इस पानी के छिड़काव से उनके दुख दर्द दूर हो जाएंगे यह स्थल पौराणिक काल से आधुनिक युग में भी लोगों की आस्था और विश्वास का केंद्र बना हुआ है। इसके अलावा भी यहाँ पर कई प्रसिद्ध मेलों का आयोजन होता है जैसे - कल्लाजी का मेला, देव सोमनाथ जी, विजवा माता का , गोपेश्वर का मेला आदि।

हाॅट बाजार- वागड़ में हाॅट सप्ताह के अंत में या फिर सप्ताह के किसी एक दिन आयोजित होते हैं । इन हॉट बाजारों में प्रसिद्ध हैं -कालिंजर का हाट बाजार , आंबापुरा का ,दानपुर का, चिखली का , विजवा माता का ,भगोरिया का हाट बाजार इन हाट बाजारों में दैनिक जीवन से उपयोगी वस्तुएं , सब्जी और कुछ कपड़े भी मिलते हैं। वागड़ के युवा स्त्री-पुरुष यहाँ पर सज धज कर जाते हैं और यहीं से बहुत सारे युवा- युवती प्रेम प्रसंग में पड़ जाते हैं । वैसे आज के युग में हाट बाजार कम ही देखने को मिलते हैं । परंतु वागड़ में ये हाट बाजार वागड़ संस्कृति के अभिन्न अंग बने हुए हैं। यद्यपि इनमें आज काफी परिवर्तन आ गया है। परंतु फिर भी ये अस्तित्व में है यह अपने आप में एक बड़ी अनोखी बात है।
7 . तीज त्यौहार:- पूरे भारतवर्ष में होली, दीपावली, रक्षाबंधन जैसे त्योहारों की धूम रहती है। वागड़ आदिवासियों का सबसे प्रसिद्ध त्योहार होली होती है। होली पर यहाँ के पुरुष ढोल बजाते हैं सभी आदिवासी नए वस्त्र पहनकर बड़े ही हर्षोल्लास के साथ यह त्यौहार मनाते हैं। सामूहिक रूप से खूब नाच गान करते हैं । माँस ,मदिरा और मिठाइयों का सेवन करते हैं। होली पूरे बागड़ में अनेक तरह से मनाई जाती है जैसे- कहीं पर कंडों की होली खेली जाती है, कहीं पर पत्थरों की राड़ खेली जाती है। डूँगरपुर के भीलवाड़ा इलाके में पत्थरों की राड , कोकापुर की अंगारा होली, ठीकरिया में फिर से शादी की परंपरा है। कुछ जगह कंडो की होली की तो कुछ जगह टमाटर की राड़ खेली जाती है।

कुछ ऐसे त्योहार जिनके नाम आप केवल वागड़ में ही सुन पाएंगे जैसे-
(1) पालिया पावणा - इस त्योहार में पहली रक्षाबंधन पर दुल्हन के भाई और पिता दुल्हन के घर जाते हैं और वर पक्ष के सभी लोगों को अपनी हैसियत के हिसाब से पारंपरिक रूप से उपहार देख कर आते हैं । यह त्यौहार पारिवारिक सौहार्दता और भाईचारे का संदेश देती है।

(2) चौदस - वागड़ वनवासियों में चौदस का विशेष महत्व है इस दिन भील अपने पूर्वजों की पूजा अर्चना करते हैं । मृत आत्माओं की स्मृति में उनके (आघाट)स्मृति चिन्ह स्थापित करवाते हैं।

(3) देव दिवाली - यह त्योहार जून महीने में आता है इस दिन आदिवासी अपने सभी देवी देवताओं की पूजा करते हैं।

(4)दिवासा - इसमें वर्षा के देवता, बाबा देव को प्रसन्न करने हेतु कन्याएं श्रृंगारित होकर पूजा अर्चना करती हैं । ताकि वर्षा अच्छी हो ,फसल अच्छी हो और आदिवासियों की आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके।

खान-पान

वागड के वनवासी खानपान में शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार का भोजन करते हैं। इनका मुख्य भोजन मक्का होता है। मक्के के साथ- छाछ - मट्ठा , साग भाजी, मेजी रोटी (मिक्स रोटी) का उपयोग करते हैं। महुआ वृक्ष के के मादक पेय पदार्थ का उपयोग इनके जीवन का अहम हिस्सा होता है ।

जिन पुरुषों को एक बार मादक पेय पदार्थों की लत लग जाती है । वो शराब के नशे में ऐसे डूबे रहते हैं कि उन्हें अपने बीवी -बच्चों की भी फिक्र नहीं रहती है । ऐसे लोग शराब का इंतजाम करके कहीं कोने में पड़े रहते हैं। इनसे विकास की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती है।वर्तमान युग में देश के सभी भागों में शराब का चलन बहुत ज्यादा हो गया हर छोटी बड़ी पार्टी में शराब का सेवन देखने को मिलती है।

वेशभूषा

वागड़ समाज में आदिवासी महिलाओं के साथ पुरुष भी आभूषण पहनते हैं। पुरुष मुख्यरूप से बूंदा, मूरकी, चैन ,अंगूठी आदि पहनते हैं। यहाँ के पुरुष वस्त्रों में तो सामान्य धोती-कुर्ता ही पहनते हैं।महिलाएं घुटनों तक का घाघरा (कछाबू),चोली कांचली, पहनती हैं और ओढ़नी कम चौडी ओढती हैं । शादीशुदा महिलाएं चाँदी के आभूषण मुख्यतः पहनती हैं । शादी का जोड़ा पीला और सफेद रंग का होता है।वर्तमान में वागड़ आदिवासी की वेश-भूषा पर शहरी वेश -भूषा का बहुत प्रभाव पड़ा है। लोग यहाँ पर परंपरागत पोशाक के अलावा भी सभी प्रकार के वस्त्र धारण करते हैं।वागड में महिलाएं फैशन के लिए चश्मा खूब लगाती हैं।

नृत्य

वागड़ के आदिवासी अनेक अवसरों पर अनेक तरह के नृत्यों का आयोजन करते हैं जैसे- हाथी मना नृत्य , युद्ध नृत्य , गरबा नृत्य, आटिया नृत्य , भूरिया नृत्य, डी.जे नृत्य, रासलीला नृत्य आदि। यहाँ के नृत्यों की खास विशेषता यह है कि इनके ज्यादातर नृत्य सामूहिक रूप से किए जाते हैं। वागड़ आदिवासियों की जीवन शैली में सामूहिक रूप से कार्यक्रमों विशेष महत्व है । गरबा और डांडिया यहाँ के नृत्य नहीं है , परंतु गुजरात की सीमा पर स्थित होने के कारण गुजराती प्रभाव के फल स्वरुप ये नृत्य यहाँ पर किए जाते हैं। वागड़ में गवरी नृत्य, नाटक का मंचन करीबन 40 दिनों तक चलता है। यहाँ की संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है । आजकल के चित्रकार गवरी पात्रों को चित्रकारी का विषय बनने लगे हैं। वास्तुकार गवरी कलाकारों की मूर्ति बनाते नजर आते हैं। गवरी कलाकार शिव, पार्वती, शेर, गीदड आदि का रूप धारण करते हैं,अपने शरीर को इन पात्रों के अनुसार सजाते हैं और उन्हीं पात्रों के अनुसार मंचन करते हैं। गवरी नृत्य, नाटक वागड़ में नुक्कड़ों पर विशेष रूप से आयोजित होता है ।

डी .जे. नृत्य- ये नृत्य वागड़ का नृत्य नहीं है परंतु आधुनिक युग में सभी जगह पर डी. जे. नृत्य का आयोजन किया जाता है ,तो उन से प्रभावित होकर यहाँ पर भी शादी विवाह या अन्य सांस्कृतिक कार्य में डी. जे. का प्रचलन मुख्य रूप से देखने को मिलता है। आधुनिक युग में डी.जे. पर हर वर्ग के लोग सामूहिक रूप से खूब थिरकते नजर आते हैं।

रासलीला- भी वागड़ संस्कृति का अंग नहीं था । परंतु वागड़ में कृष्ण अवतार मावजी के भक्त, मावजी की स्मृति में रासलीला का आयोजन करते हैं। पहले तो यह लोग बृज भूमि से कलाकारों का बुलाते थे परंतु वर्तमान में वागड़ में ही अनेक नए कलाकार रासलीला में माहिर हो चुके हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि बदली हुई सांस्कृतिक परंपराओं का प्रभाव हर जगह दिखाई देता है।

लोकगीत

लोकगीत किसी भी लोक संस्कृति के प्राण होते हैं। इसी प्रकार वागड़ क्षेत्र के आदिवासियों की लोक संस्कृति भी इनके लोकगीतों में व्यक्त होती है। इनकी बहुमूल्य सांस्कृतिक विरासत , इनका इतिहास, इनके लोकगीतों में ही शामिल है । पौराणिक कथा

कहानियों के संदेशों को गवरी नृत्य के कलाकार लोगों के मध्य लोकगीतों के माध्यम से ही ले जा पाते हैं।

वागड़ के महापुरुषों के बारे में भी काफी लोकगीत प्रचलित हैं जैसे - गोविंद गिरी का प्रसिद्ध लोकगीत है- "भूरटिया तथा अंग्रेजां नी नई मानू, नई मानू,तालोद म्हारी थाली है, गोधरा में मारी कोडी है, अंग्रेजियां नई मानू नई मानू .....।"

मावजी जो वागड़ के धार्मिक गुरु और कृष्ण अवतार माने जाते हैं। स्थानीय भाषा में, वागडी भाषा में उनके श्रद्धालुओं ने के ऊपर अनेक भजन, लोकगीत लिखे हैं जो काफी प्रसिद्ध हैं जैसे-" न्यारा- न्यारा जुग कहे परमेश्वर न्यारा। साहब न्यारा जो होए, काया कणु आधारा।"

इसी प्रकार वागड़ की मीरा कही जाने वाली गवरी बाई के भजन भी लोक गीतों में व्यक्त हुए हैं- "प्रभु मोकू एक बर दरसन देइये । तुम कारण मैं भई रे दिवानी, उपहास जगत ही सहिये.....।"

हमसीढो और सुवंरिया यहाँ के स्त्री पुरुषों द्वारा गाए जाने वाले प्रमुख लोकगीतों में शामिल है।लोकगीतों पर भी बदलती सांस्कृतिक परंपराओं का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है ।अभी वागड़ी में जो लोकगीत बनाए जाते हैं उनमें कुछ अंग्रेजी के और हिंदी के शब्द भी देखने को मिलते हैं।

धार्मिक मान्यताएं एवं परंपराएं

वागड़ आदिवासियों का प्रकृति से गहरा संबंध रहा है इसलिए ये लोग प्रकृति पूजक के रूप में ज्यादा दिखाई देते हैं । उनके ज्यादातर तीज त्यौहारों में प्रकृति ,पेड़- पौधे, नदी , पशु पक्षी आदि का पूजन करते दिखाई देते हैं। प्रकृति पूजा केवल वागड़ में ही नहीं बल्कि नहीं पूरे भारतवर्ष में अनेकों प्रकार से की जाती है । सिंधु सभ्यता से अब तक निरंतर अनेक अवसरों पर प्रकृति पूजा के उदहारण हम अपने आस-पास देख सकते हैं। वर्तमान में वागड़ आदिवासियों की जीवन शैली वनों पर आश्रित कम नजर आती है। इस कारण हर बात में प्रकृति पूजा के उदाहरण पहले की तुलना में कम नजर आते हैं।

अंधविश्वास

वागड़ आदिवासियों में शिक्षा की अलख अभी भी शेष भारत से कम जागृत हुई है इसीलिए यहाँ पर अंधविश्वास बहुत ज्यादा देखने को मिलता है। यहाँ पर लोग छोटी-छोटी बीमारियों में भोपों के पास इलाज हेतु चले जाते हैं । जबकि डॉक्टर के पास जाना कम पसंद करते हैं। किसी भी बीमारी को वो बाहरी हवा,ऊपरी शक्ति मान बैठते हैं । यहाँ के वनवासी अपने पूर्वजों की आत्मा में बहुत ज्यादा विश्वास करते हैं वे अक्सर कहते हैं कि उनके पूर्वज उन्हें परचे देते हैं और कहते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए ? इस तरह की अंधविश्वासी बातें वहाँ पर खूब देखने को मिलती हैं।हालांकि थोड़े बदलाव आ रहे हैं परन्तु उनकी गति अत्यंत धीमी है ।

डाकन प्रथा

वागड़ में डाकन प्रथा बहुत याद देखने को मिलती है । यहाँ के लोग किसी भी महिला में डाकन का वास बता कर उससे सामाजिक दूरी बना लेते हैं । डाकन कहीं जाने वाली महिला महिला को लोग शारीरिक और मानसिक रूप से भी प्रताड़ित करते हैं। ऐसी महिलाओं का जीना बहुत कष्टदायक हो जाता है।

हालांकि देश की आजादी के साथ ही इस तरह की सभी कुरूतियों पर पाबंदी लगा दी थी । फिर भी वागड़ में ऐसी कुरुतियाँ बहुत दिखाई पड़ती है। जिससे महिलाओं का खूब शोषण होता है। यद्यपि इन कुरुतियों में थोड़ा बदलाव आया है। पर ये बदलाव ना काफी है। भोपा वागड़ में इनका बहुत महत्व है। इनका मुख्य कार्य होता है झाड़-फूंक , जादू -टोने , ताबीज आदि द्वारा किसी भी बीमारी का इलाज करना। सामान्यतः इनकी कोई फीस नहीं होती है। लोग अपनी श्रद्धा के अनुसार चढ़ावा देकर आ जाते हैं। सस्ते इलाज के चलते भी शायद लोग यहाँ पर ज्यादा लोग जाते होंगे। अस्पतालों में नहीं जाने के पीछे एक बड़ी वजह यह भी हो सकता है कि अस्पतालों में जो डॉक्टर है वह समय पर उपलब्ध नहीं होते हैं और कई बार भाषा संबंधित समस्या भी आ जाती है। कुछ लोगों को केवल वागडी भाषा ही समझ में आती है ।

पर्यावरण संरक्षक

भारतीय सभ्यता संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण के गुण प्राचीन काल से ही नजर आते हैं। इसी प्रकार वागड़ आदिवासियों का वनों से सहजीवी संबंध रहा है ,इनका वनों से भावनात्मक जुड़ाव रहा है इसलिए इन्हें वन संरक्षण के बारे में ज्यादा पता होता है । ये वनों का उसी प्रकार संरक्षण करते हैं जैसे कोई माता-पिता अपने बच्चों का संरक्षण करते हैं । परंतु वन नीतियों के कारण इन्हें अपने पूर्वजों की धरोहर वन संपदा से हमेशा के लिए दूर होना पड़ा।

निष्कर्ष

अंत में हम यह कह सकते हैं कि सभ्यता संस्कृति निरंतर परिवर्तनशील है आज का युग तकनीकी का युग है। तकनीकी संचार माध्यमों से किसी वस्तु या विचारों का आदान-प्रदान आसानी से और तीव्र गति से हो जाता है। वागड़ भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका है।

यही कारण है कि वागड़ में भी आपको बॉलीवुड , डी.जे , रासलीला आदि के गाने और भजन आपको हर मौसम के अनुसार यहाँ सुनाई दे जाएंगे। आजकल लोग किसी की बर्थडे पार्टी ,एनिवर्सरी, शादी विवाह से संबंधित अन्य प्रोग्राम उसी तरह से आयोजित करते हैं जैसे टीवी, सीरियल्स में दिखाए जाते हैं । वैसे ही कपड़े पहनना पसंद करते हैं। खाने -पीने में भी काफी समानताएं देखने को मिलती है। ये सब बदलती सांस्कृतिक परंपराओं का ही असर है। इस प्रकार हम देखते हैं कि परिवर्तन सदियों पूर्व से ही हो रहे थे ।परंतु तकनीकी युग ने इन परिवर्तनों की गति को और तीव्र कर दिया । इसीलिए आज कोई परिवर्तन विश्व के किसी देश में होता है उसके कुछ दिनों बाद ही विश्व के अन्य भागों में भी वो परिवर्तन परिलक्षित होने लगते हैं । यह बदलती सभ्यता संस्कृति का प्रभाव ही है।

ऐसे में हमें इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए हर परिवर्तन अपनाने की जरूरत नहीं है केवल उन्हीं परिवर्तनों को अपनाना चाहिए जो हमारी सभ्यता संस्कृति को सकारात्मक रूप से और समृद्धि बनाते हों। हमारी सभ्यता की गरिमा के अनुरूप हों । अंत में यही कहना चाहूँगी - " कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी। सदियों रहा है दुश्मन, दौर-ए-ज़माँ हमारा।। सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा। "

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. तबियार विक्रम सिंह - "वागड़ के आदिवासी समाज की सामाजिक परंपराएं एवं रीति रिवाजों का बदलता स्वरूप "(स्वतंत्रता प्राप्ति से वर्तमान तक) पृष्ठ संख्या 4, 55 ,91
2. गरासिया महिपाल- "राजस्थान की वागड़ अंचलया आदिवासी लोक संस्कृति एक अध्याय " पृष्ठ संख्या 41, 120, 201, 205
3. " ट्राईब" जनजातियों के मेले एवं त्यौहार विशेषांक (जनवरी-मार्च 2019) प्रधान संपादक जैन दिनेश चंद्र, पृष्ठ संख्या 71 , 72
4. काले मालिनी- "वाग्यवर वसुधरा की भक्ति धारा" पृष्ठ संख्या 3, 4
5. मीना ,जगदीश - "भील जनजाति का सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन " पृष्ठ संख्या 28 , 67, 91
6. गुप्ता ,डॉक्टर रमणिका - "आदिवासी विकास से विस्थापन"
7. सुधीर, "आदिवासी महिला की स्थिति और उनका पलायन "पृष्ठ संख्या 77
8. नरेंद्र एवं व्यास महेंद्र भनावत - "जनजातीय जीवन और संस्कृति "पृष्ठ संख्या 11,102,103
9. गणेश लाल निनामा -" जनजाति लोक सांस्कृतिक परंपराओं के बदलते आयाम " पृष्ठ संख्या 125
10. राष्ट्रीय संगोष्ठी "राजस्थान का जनजातीय परिदृश्य चुनौती एवं संभावनाएं " में सहभागिता की तथा "आदिवासी समाज में महिलाओं की स्थिति" पर शोध पत्र प्रस्तुत किया आदि से प्राप्त ज्ञान अर्जन के आधार पर।
11. राज्यसभा टीवी पर प्रसारित कार्यक्रम मैं भी भारत हूँ।
12. भील आदिवासियों से प्रत्यक्ष वार्ता।
13. ऐतिहासिक स्थलों का प्रत्यक्ष दर्शन।
14. कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रत्यक्ष शिरकत।
15. Rao,Dr. Mahipal Singh - "Social Aspects of Tribal Literature published 2014 page no.106,110
16. www.shodhganga.com
17. www.tribalculture.com